

इंटरनेट : वरदान या अभिशाप

सूचना क्रांति के दो पहलू

रूपरेखा

1. प्रस्तावना · 2. शिक्षा और ज्ञान का भंडार · 3. संचार और सामाजिक जुड़ाव · 4. व्यापार, बैंकिंग और सरकारी सेवाएँ · 5. मनोरंजन · 6. इंटरनेट के दुष्प्रभाव · 7. संतुलित उपयोग ही समाधान · 8. उपसंहार

साधन अपने आप में न अच्छा होता है, न बुरा; उसका उपयोग उसे अच्छा या बुरा बनाता है।

— प्रचलित कथन

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी को सूचना क्रांति की सदी कहा जाता है, और इस क्रांति का सबसे बड़ा माध्यम है इंटरनेट। इंटरनेट दुनिया भर के करोड़ों कंप्यूटरों और मोबाइल फ़ोनों को आपस में जोड़ने वाला एक विशाल जाल है। इसके माध्यम से हम कुछ ही क्षणों में कोई भी जानकारी खोज सकते हैं, संदेश भेज सकते हैं और दूर बैठे लोगों से जुड़ सकते हैं।

आज छोटे-से गाँव का विद्यार्थी भी मोबाइल पर ऑनलाइन कक्षा में पढ़ रहा है और किसान मंडी के भाव देख रहा है। परंतु जितनी तेज़ी से इंटरनेट हमारे जीवन में आया है, उतनी ही तेज़ी से इसके दुष्प्रभाव भी सामने आए हैं। इसलिए यह प्रश्न स्वाभाविक है कि इंटरनेट वरदान है या अभिशाप।

शिक्षा और ज्ञान का भंडार

इंटरनेट को ज्ञान का महासागर कहा जा सकता है। किसी भी विषय की जानकारी, पुस्तकें, शोध-पत्र और वीडियो व्याख्यान यहाँ उपलब्ध हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी घर बैठे नए कौशल सीख सकते हैं। कोरोना महामारी के समय जब विद्यालय बंद थे, तब इंटरनेट ने ही पढ़ाई को रुकने नहीं दिया।

संचार और सामाजिक जुड़ाव

ई-मेल, वीडियो कॉल और संदेश सेवाओं ने संचार को तेज़, सस्ता और आसान बना दिया है। परदेस में रहने वाले बच्चे अपने माता-पिता को रोज़ देख सकते हैं। सोशल मीडिया ने आम लोगों को भी अपनी बात दुनिया तक पहुँचाने का मंच दिया है।

व्यापार, बैंकिंग और सरकारी सेवाएँ

ऑनलाइन खरीदारी, डिजिटल भुगतान और इंटरनेट बैंकिंग ने लंबी कतारों से मुक्ति दिलाई है। छोटे कारीगर और दुकानदार भी अपना सामान देश भर में बेच पा रहे हैं। बिजली-पानी के बिल, रेल टिकट, छात्रवृत्ति के आवेदन और अनेक प्रमाण-पत्र अब घर बैठे प्राप्त किए जा सकते हैं।

- समय और धन की बचत
- पारदर्शिता में वृद्धि
- घर बैठे रोज़गार और फ़्रीलांस काम के अवसर

मनोरंजन

संगीत, फ़िल्में, खेल और रोचक वीडियो — मनोरंजन का हर साधन आज इंटरनेट पर उपलब्ध है। थके हुए मन को कुछ समय का मनोरंजन ताज़गी देता है, बशर्ते वह सीमा में हो।

इंटरनेट के दुष्प्रभाव

इंटरनेट का अत्यधिक और असावधान प्रयोग अनेक समस्याएँ पैदा करता है। बच्चे और युवा घंटों मोबाइल पर बिताने लगे हैं, जिससे उनकी पढ़ाई, नींद और स्वास्थ्य प्रभावित होते हैं। आँखों की कमज़ोरी, गर्दन का दर्द और चिड़चिड़ापन आम शिकायतें बन गई हैं।

साइबर अपराध — जैसे ऑनलाइन ठगी, पासवर्ड की चोरी और फ़र्जी कॉल — तेज़ी से बढ़े हैं। सोशल मीडिया पर फैलने वाली झूठी ख़बरें समाज में भ्रम और तनाव पैदा करती हैं। आभासी दुनिया में खोकर हम अपने आस-पास के लोगों से दूर होते जा रहे हैं।

सावधान रहें

अपना पासवर्ड, ओटीपी या बैंक की जानकारी किसी के साथ साझा न करें, चाहे संदेश कितना भी विश्वसनीय लगे।

संतुलित उपयोग ही समाधान

इंटरनेट से दूर भागना समाधान नहीं है; आवश्यकता है इसके समझदारी भरे उपयोग की। स्क्रीन के लिए समय निर्धारित करें, सोने से पहले मोबाइल दूर रखें और किसी भी जानकारी को आगे भेजने से पहले उसकी सच्चाई जाँच लें।

माता-पिता और शिक्षकों को बच्चों के साथ बैठकर इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग पर बात करनी चाहिए। विद्यालयों में साइबर सुरक्षा की शिक्षा भी उतनी ही आवश्यक है जितनी सड़क सुरक्षा की।

उपसंहार

इंटरनेट न पूरी तरह वरदान है, न पूरी तरह अभिशाप। यह एक तेज़ धार वाले चाकू की तरह है, जिससे फल भी काटा जा सकता है और चोट भी लग सकती है। हमारा विवेक ही तय करता है कि हम इसका प्रयोग किस दिशा में करते हैं।

यदि हम संयम, सावधानी और सही उद्देश्य के साथ इंटरनेट का उपयोग करें, तो यह निश्चय ही मानवता के लिए सबसे बड़ा वरदान सिद्ध होगा।